अजायबबानी

मासिक पत्रिका

जनवरी-2022

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–उन्नीसवां | अंक–नौवां | जनवरी–2022

नये साल का संदेश 3

सच्ची आजादी (सतसंग) 7

तड़प (सवाल-जवाब) 15

सुख और दुःख (सतसंग) 23

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04

उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **डॉ सुखराम सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 238 Website : www.ajaibbani.org

RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा

नये साल का संदेश

16 पी.एस.आश्रम (राजस्थान)

हुजूर सावन और कृपाल के नाम में आप सबको नये साल की बहुत–बहुत शुभकामनाएं। मैं आशा करता हूँ कि यह नया साल आप सबके लिए खुशियाँ लेकर आए और आप नये साल में ज्यादा से ज्यादा भजन–सिमरन कर सकें।

आज के दिन हिन्दुस्तान में बहुत से समाज सुबह तीन बजे दरिया, तालाब या नहर पर जाकर स्नान करने को बहुत ही पुण्य समझते हैं। आज के दिन बहुत से लोग अपनी–अपनी बोली में प्रभु को याद करते हैं लेकिन हमारे ऊँचें भाग्य हैं कि हमें प्रभु के साथ जुड़ने का मौका मिला है।

जब से इंसान बना है तब से ही यह परम्परा चली आ रही है कि प्रभु हमारे अंदर है। आप उस तीर्थ पर जाकर स्नान करें जहाँ जन्मों–जन्मों की मैल उतरती है, वह तीर्थ हमारे शरीर के अंदर दसवें द्वार में है। सन्त हमेशा उस तीर्थ की महिमा गाते हैं। जब हम अपनी आत्मा के ऊपर से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतार लेते हैं तब आत्मा वहाँ स्नान करती है। सन्तों ने वहाँ के स्नान का महत्त्व बताया है लेकिन हम बाहर के रीति–रिवाजों में लग गए हैं। वही शिष्य है, वही सन्त है जो सुबह उठकर दसवें द्वार में पहुँचकर स्नान करता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

गुरु सतगुरु का जो सिक्ख अखाए, सो भलके उठ हरि नाम ध्यावै
उद्यम करे भलके प्रभाती, स्नान करे अमृतसर न्हावै

हम पढ़–पढ़ाई से, दुनिया के किसी कर्मकांड या रीति–रिवाज से वहाँ नहीं पहुँच सकते, यह सिर्फ जुबानी जमा खर्च है, इससे ज्यादा कुछ नहीं।

कबीर साहब कहते हैं, ''काले कम्बल पर चाहे आप सौ मण साबुन लगा लें काला कम्बल उजला नहीं हो सकता।'' मनमुख को काला कम्बल या कौआ कहा गया है। कौए की खुराक गंदगी और हंस की खुराक मोती है। गुरुमुख की खुराक नाम जपना और प्रभु के साथ जुड़ना है। जो गुरुमुख के संपर्क में आता है, गुरुमुख उसे भी प्रभु के साथ जोड़ देते हैं।

ऋषि–मुनियों ने मेहनत की, कमाई की, पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड में गए। ऋषि–मुनियों ने जो कुछ अपने अंदर देखा उसे धर्मपुस्तकों में दर्ज कर दिया। जिस तरह बाहर तीन नदियाँ गंगा, यमुना और सरस्वती इकट्ठी होती हैं, जहाँ इनका संगम होता है वहाँ स्नान करने को लोग बहुत पवित्र समझते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

तीन नदी त्रिकुटी मांही

आप पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड में जाएं आपको अंदर भी ये तीनों नदियाँ मिलेंगी। इनमें स्नान करने से आपकी जन्मों–जन्मों से सोई हुई आत्मा जाग जाएगी, पवित्र हो जाएगी फिर मनमुख की गति छोड़कर गुरुमुख की गति प्राप्त करने की कोशिश करेगी। गुरु अमरदेव जी ने अंदर सच्चा अमृतसर देखकर अपनी बाणी में लिखा हैः

सच्चा अमृतसर काया माहे मन भावे पाहे सो पाहे हे

गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं, ''आपके अंदर जो अमृतसर है, आप उसमें जाकर स्नान करें।'' जो अमृतसर बाहर है, हम उसकी बहुत इज्जत करते हैं। गुरु रामदास जी ने इस मंदिर की नींव रखी थी और इसे पाँचवें गुरु अर्जुनदेव जी ने पूरा किया था।

गुरु रामदास जी जब इस मंदिर की नींव रखने लगे तब उन्होंने मिस्त्री से कहा, ''प्यारेया, हम यहाँ दसवें द्वार के कमल की शक्ल का मंदिर बनाएंगे ताकि लोगों के दिलों में यह चाव पैदा हो कि हम अंदर के कमल में जाकर स्नान करें और आत्मा के जन्म–जन्मांतर के बुरे कर्म धुल जाएं।''

वह मिस्त्री कभी अंदर नहीं गया था, वह किस तरह दसवें द्वार के कमल की नकल बना सकता था? मिस्त्री ने कहा, ''मैं मजबूर हूँ क्योंकि मैंने वह कमल नहीं देखा।'' गुरु रामदास जी ने मिस्त्री को भजन में बिठाया, अपनी तवज्जो दी और उसकी सुरत अंदर ले गए।

किसी चीज को अंदर देखकर बाहर उसकी नकल बना लेनी आसान होती है। गुरु रामदास जी ने तवज्जो देकर मिस्त्री की सुरत उतारी और उससे पूछा, ''क्यों भई, अब तो बना लेगा?'' मिस्त्री ने कहा, ''महाराज जी, मुझे वहीं रहने दें।'' गुरु रामदास जी ने कहा, ''पहले तू बाहर बना फिर तुझे इसी जगह ले आएंगे।''

प्यारेयो, महात्मा हमारे लिए धर्मग्रंथों में जो हिदायतें देकर गए हैं, हमारा भी फर्ज बनता है कि हम उन हिदायतों पर चलें, जैसे उन्होंने अपने गुरुओं के पास जाकर नामदान प्राप्त किया, मेहनत की हम भी उसी तरह करें तो कामयाब हो सकते हैं।

हम अपने शुभचिंतकों, रिश्तेदारों और दोस्तों को हर बार नये साल की शुभकामनाएं देते हैं अगर कोई दूर रहता है तो उसको पत्रों के जरिए लिखकर भेज देते हैं कि आपको नया साल मुबारक हो। सन्त–महात्मा जब भी इस संसार में आते हैं वे बहुत प्यार से अपनी आत्माओं को, अपने बच्चों को नये साल का संदेश देते हैं कि पिछले सालों में आपने सुरत–शब्द का अभ्यास नहीं किया, अब आप अभ्यास करें और इस जिंदगी को सफल बनाएं। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज अपनी आत्माओं को संदेश देते हुए कहते हैं कि मनुष्य जन्म आपको एक नया जामा मिला है।

माघ मज्जन संग साधुआं धूड़ी कर स्नान
हरि का नाम ध्याए सो सबना लोक निदान
जन्म कर्म मल उतरे अन्ते जाए गुमान

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ने दुनिया को बंदर की तरह नचा रखा है, दिन–रात लोभ का कुत्ता भौंक रहा है। 'शब्द–नाम' की कमाई करने से ये सारे डाकू शान्त हो जाते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

अपने जीव की दया पा लो चौरासी का फेर बचा लो

जब हम भजन–सिमरन करते हैं तो किसी पर कोई एहसान नहीं कर रहे होते, यह तो हम अपने ऊपर दया कर रहे होते हैं। जो अपने ऊपर दया करता है वह दूसरों पर भी दया कर सकता है।

महाराज कृपाल सिंह जी ने हमें डायरी रखने की हिदायत दी कि आप हर महीने अपना लेखा–जोखा करें कि आपने इस महीने में कितने पाप किए, किसी की कितनी निन्दा की, किसी के पैसे का कितना नुकसान या फायदा किया, कितना भजन–सिमरन किया? हम महीने के शुरु में अंदर क्या देखते थे और महीने के अंत में हमने आगे तरक्की की या नीचे गए?

मैं आप सबको मुबारक देते हुए यही कहूँगा कि आप लोग अपना जीवन उस डायरी के मुताबिक ही बना लें। रोजाना डायरी को बहुत ईमानदारी से गुरु को सामने रखकर भरें, मन का कोई लिहाज न करें। जो गलती एक दिन हो जाती है उसे दूसरे दिन न दोहराया जाए। आप साल भर का लेखा–जोखा बनाएं कि हमने इस साल भजन–सिमरन में कितनी तरक्की की या हम कितना नीचे गए? नीचे गए तो क्यों गए? किस कारण हम ज्यादा भजन–सिमरन करके अंदर तरक्की कर सके?

प्रभु ने अपनी खास दया करके हम जीवों को सब योनियों से ऊपर चौरासी लाख योनियों का सरदार इंसान की ऊँची योनि दी है। गुरु ने हम पर बहुत भारी दया करके हमें नाम का तोहफा दिया है। अब हमारा फर्ज बनता है कि हम इस जीवन को पवित्र बनाएं, शब्द–नाम की कमाई करें।

***

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

17 दिसम्बर 1995
कबीर साहब की बानी

सच्ची आजादी

ऑडियो– 286 साँपला (हरियाणा)

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने अपार दया करके हमें अपना यश करने का मौका दिया है। यह उनकी दया ही है कि हम उनकी याद में बैठकर शान्ति के कुछ क्षण प्राप्त कर सके। आपके आगे कबीर साहब का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनने वाला है। बेशक बच्चा स्कूल में जाना बंधन समझता है लेकिन जब बच्चा धीरे–धीरे पढ़ जाता है, अच्छी जिंदगी व्यतीत करता है फिर उसे पता लगता है कि पढ़ाई जिंदगी का श्रृंगार है। इसी तरह बहुत से प्रेमी गुरुमत में आने को बंधन समझते हैं। शुरु–शुरु में यह हमें बंधन जरूर लगता है, गुरुमत में आकर हमें बहुत सी आदतें बदलनी पड़ती हैं लेकिन सच तो यह है कि गुरुमत ही **सच्ची आजादी** प्राप्त करने का एक साधन है।

प्यारेयो! आजकल सारे मुल्क यह दावा करते हैं कि हमने आजादी प्राप्त कर ली है लेकिन उन्हें **सच्ची आजादी** का पता नहीं। मुझे संसार के कोने–कोने में जाने का मौका मिला है। हम जिन मुल्कों को आजाद समझते हैं वहाँ जाकर पता लगता है कि वे मुल्क जरूरत से ज्यादा बंधन में है।

हम जिसे आजादी समझते हैं वह **सच्ची आजादी** नहीं। क्या हम काम से आजाद है? काम हमसे जानवरों वाले काम करवा लेता है। काम के वश होकर हम एक–दूसरे के अधीन हो जाते हैं। क्या हम क्रोध से आजाद है? क्रोध पति–पत्नि के बीच झगड़ा करवा देता है, बाप–बेटे के बीच झगड़ा करवा देता है, भाई–भाई के बीच झगड़ा करवा देता है। क्या हम मोह से आजाद हैं? लालची आदमी माँस के टुकड़े से ज्यादा नहीं होता, वह जायज, नाजायज सब कुछ ही कर जाता है।

सन्त हमें प्यार से समझाते हैं कि आप जिसे आजादी समझते हैं यह आजादी नहीं बंधन है। जब आप मन–इन्द्रियों की गुलामी से छुटकारा पा लेंगे, शब्द के साथ जुड़ जाएंगे, अपने घर सच्चखंड जहाँ से आत्मा आई है वहाँ पहुँच जाएंगे तभी आपको सच्ची शान्ति, **सच्ची आजादी** मिलेगी।

बिन सतगुर नर भरम भुलाना।। बिन सतगुर नर भरम भुलाना।।
सतगुर सब्द का मर्म न जाना, भूलि परा संसारा।।

कबीर साहब हमें प्यार से कहते हैं कि जब तक हमें पूर्ण सतगुरु नहीं मिलता तब तक हमारे अंदर से भ्रम दूर नहीं होता कि सच्ची आजादी क्या है? हम संसार में जो कुछ आँखों से देखते हैं यह एक भ्रम है, एक छलावा है। हम सन्तों के पास जाने से घबराते हैं। बहुत से समाज तो यह भी कहते हैं कि हमें किसी गुरु–पीर की जरूरत ही नहीं। संसार में जितने भी पूर्ण सन्त आए हैं किसी ने भी यह नहीं कहा कि मेरे बाद कोई गुरु नहीं आएगा या गुरु की जरूरत नहीं होगी। हर एक सन्त ने अपनी लेखनी में प्यार और विश्वास से लिखा है कि अनेक महात्मा आए हैं और अनेक महात्माओं ने आना है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''यह रास्ता आदि–जुगादि से चला आ रहा है।''

आमतौर पर सामाजिक लोग जिन महात्माओं को गए हुए हजारों साल हो गए हैं उन महात्माओं के किस्से–कहानियाँ पढ़ते हैं कि उन्होंने इस तरह कमाई की और इस तरह करामातें दिखाई; वही आकर हमारी मदद करेंगे। सन्त प्यार से कहते हैं अगर पिछले महात्मा आकर ही हमारी मदद कर सकते तो उन महात्माओं को संसार में आने की क्या जरूरत थी। हमने उन महात्माओं के साथ कौन सा प्यार किया? किसी महात्मा को काँटो का ताज पहना दिया, किसी को सूली पर चढ़ा दिया। हम कबीर साहब की बानी पढ़ रहे हैं इन्हें हाथी के आगे गठड़ी बाँधकर फैंका गया, आग में फैंका गया, जंजीरों से बाँधकर पानी में फैंका गया।

कबीर साहब कहते हैं कि किस समाज, किस मुल्क का नाम लें कि वह भ्रम में नहीं है। जब तक गुरु नहीं मिलता चाहे औरत है या मर्द है, चाहे हिन्दुस्तानी है या अमेरिकन है, हर एक भ्रम में है। परमात्मा का शब्द सच्चखंड से उठकर हमारे माथे के पीछे धुनकारे दे रहा है, हमें इसका ज्ञान नहीं कि हमने इसे किस तरह प्राप्त करना है और किस तरह इसके साथ जुड़ना है? किसी ने सुथरा फकीर से कहा कि इस बार यहाँ बहुत शादियाँ हुई हैं, तब सुथरा फकीर ने कहा:

कैसे साहे जब हम न ब्याहे।

हम जब तक खुद भक्ति करके भक्ति का रूप नहीं हो जाते, खुद जाकर परमात्मा से नहीं मिल लेते तब तक हमें शन्ति नहीं आती, परमात्मा नहीं मिलता। लोगों की कमाई के गीत गाने से शान्ति नहीं आती, परमात्मा नहीं मिलता, उसी तरह ये लोगों की शादियों के गीत हैं। सुथरा फकीर छठे गुरु से लेकर गुरु गोबिंद सिंह जी के समय तक संसार में रहा। सुथरा बहुत लाधड़क कमाई वाला फकीर हुआ है।

एक बार सुथरा फकीर ने किसी गुरुद्वारे में रात काटी। हिन्दुस्तान में रिवाज है कि लड़के या लड़की की शादी के बाद मंदिर, मस्जिद या गुरुद्वारे में जाकर माथा टिकवाते हैं। वहाँ के पंडित, मौलवी या भाई को मिठाई भेंट करते हैं। वह आशीष देता है कि आपकी आयु चार युग की हो जाए, घर के लोग खुश हो जाते हैं। वहाँ सुथरा फकीर बैठा था। पुजारी ने पैसे जेब में डाल लिए और मिठाई का डिब्बा सुथरा फकीर की तरफ कर दिया। सुथरा मिठाई खाने से पहले लड़के और लड़की को मुखातिब करके कहने लगा, ''देख! तूने भी मर जाना है और तूने भी मर जाना है।'' घर के लोगों ने कहा हाय! हाय! फकीरा तू ऐसा वचन क्यों कहता है? सुथरा ने कहा, ''क्या आपने मरना नहीं या मैंने संसार नहीं छोड़ना? मैं दो रूपयों के लिए झूठ नहीं बोलता, झूठ बोलने के लिए ये भाई रखा हुआ है।''

कबीर साहब कहते हैं कि जब तक हमें पूरा गुरु नहीं मिलता, शब्द–नाम का भेद नहीं मिलता और हम 'शब्द–नाम' के साथ नहीं जुड़ जाते तब तक हम इस भ्रम या छलावे की दुनिया से ऊपर नहीं उठ सकते।

बिना नाम जम धरि धरि खैहै, कौन छुड़ावनहारा।।

सन्तों की बानी न रोचक होती है, न भयानक होती है, यह यर्थाथ होती है। आमतौर पर सामाजिक लोग हमें रोचक या भयानक बानी सुनाते हैं। वे स्वर्गों का लालच देते हैं या नर्कों का डर दिखाते हैं लेकिन सन्तमत में ऐसा नहीं होता, यह तो यथार्थ समान विद्या है। सन्तों का प्रचार कुदरत के नियमों के मुताबिक होता है। सन्त किसी का खंडन या मंडन नहीं करते। गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''आपको जो यह चलती–फिरती दुनिया नजर आ रही है इसका कोई न कोई कर्ता जरूर है और कोई इसका हिसाब–किताब रखने वाला भी है, उसे धर्मराज का नाम दिया गया है।''

धर्मराज को हुक्म है वह सच्चा करे न्याय।

धर्मराज की किसी के साथ दुश्मनी नहीं किसी के साथ प्यार नहीं, वह परमात्मा का हुक्म बजाता है। सन्तों ने ऐसी ताकत देखी होती है जिसे किसी गवाही या सबूत की जरूरत नहीं। हम अपनी जिंदगी के किस्से को अन्त समय में सिनेमा की स्क्रीन की तरह खुद ही देख लेते हैं।

महाराज सावन सिंह जी का एक नामलेवा सतसंगी अमृतसर का रहने वाला था। वह बीमार हुआ, उसने शरीर छोड़ दिया। दो मिनट बाद वह फिर शरीर में आया, उसने बताया कि मैंने अपनी आँखों के पीछे एक बहुत ही जबरदस्त आदमी देखा, उसके हाथ में एक बहुत बड़ी बही थी। जब उसने वह बही खोलकर देखी तो वह बोला कि अभी इसका समय नहीं आया वह आदमी तो कोई और है। उस सतसंगी ने बताया कि सन्तों की बानी में जिसे धर्मराज बताया गया है कि वह बही लेकर बैठ जाता है और हर एक का हिसाब माँगता है। मैंने आँखों से देखा है, वास्तव में हिसाब होता है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि चित्र और गुप्त दो देवता मुकर्रर किए गए हैं। हम जो भी अच्छा या बुरा कर्म सोचते हैं उसे चित्र और गुप्त दर्ज कर लेते हैं। जो 'शब्द–नाम' के साथ जुड़े हुए हैं उनकी तरफ वे आँख भरकर भी नहीं देखते, उनका लेखा नहीं लिख सकते क्योंकि उन्होंने न बुरा सोचना है, न अच्छा सोचना है। उनकी सोच परमात्मा की भक्ति की तरफ है, उनके अंदर दिन–रात सिमरन की कल्पना उठ रही है।

चित्र गुप्त जो लिख दे लेखा, भक्त जना को आँख न देखा

कबीर साहब कह रहे हैं कि जब धर्मराज तुझसे लेखा माँगेगा तो तू उसे क्या जवाब देगा? जिस माता–पिता, बहन–भाई के पीछे हम अपने कीमती उसूल कुर्बान कर देते हैं, हम इनमें इतने ज्यादा खराब हो जाते हैं कि परमात्मा की भक्ति ही छोड़ देते हैं। आप इनसे पूछकर देखें कि इनमें कोई आपको छुड़वाने की हामी भरता है? गुरु बिना, नाम बिना किसने आपकी मदद करनी है? जिसने हमें छुड़वाना है उसके साथ प्यार नहीं।

दिन नहीं रैण पख न बरसा, कभी न दर्शन को मन तरसा

सिरजनहार का मर्म न जाने, धृग जीवन जग तेरा।।

कबीर साहब कहते हैं कि ऐसे जीवन को लाख लानत है कि परमात्मा ने अमोलक इंसानी जामा दिया, भक्ति करने का मौका दिया इसमें बैठकर परमात्मा की भक्ति करनी थी लेकिन सारा जीवन शराबों–कबाबों, विषय–विकारों में खो दिया। हर आदमी अपने गुणों की नुमाइश करने में लगा हुआ है अगर कोई दस रुपये दान कर दे तो अखबारों में निकलवाता है। क्या कभी किसी चोर ने अखबारों में निकलवाया है कि मैं इतनी चोरी करता हूँ? क्या कभी किसी ने पाप करके अखबारों में निकलवाया है कि मैं इतने पाप करता हूँ। हर आदमी अपने पुण्यों का, दान का ही इजहार करता है।

किए पाप रखे तले दृढ़ाए, प्रकट भए नादान जब पूछे धर्मराय

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि आपके कहे बिना आप जो सोच रहे हैं, परमात्मा उसे भी दर्ज करता है, उसे भी सुनता है। गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैं, ''परमात्मा हाथी की चीख बाद में सुनता है, चींटी की पुकार पहले सुन लेता है।'' परमात्मा हमारी छोटी से छोटी हरकत देख रहा है, हम जो दान–पुण्य करते हैं वह उसे भी देखता है। हम जो कुछ करते हैं वह सब कुछ देखता है। वह हमारी चाकरी का इनाम या दंड भी दे रहा है।

धरमराय जब पकरि मँगैहै, परिहै मार घनेरा।।

अगर कोई अपराध करके जेल जाता है तो दुनिया के मुलाजिम उसके साथ नरमी नहीं करते, उसे कष्ट देते हैं। जब हमें दुनिया का कानून माफ नहीं करता तो जो विधान परमात्मा ने बनाया है वहाँ हम कैसे माफ होंगे? कबीर साहब कहते है:

लेखा देना सहेला जे मन सच्चा होय
उस सच्चे दीवान में पल्ला न पकड़े कोय

लेखा देना तभी आसान है जब हम तन–मन से सच्चे हों। हमारी सुरत शब्द के साथ जुड़ी हो तो उस सच्चे दीवान में कोई हमारा पल्ला नहीं पकड़ सकता। कबीर साहब कहते हैं:

धर्मराय जब लेखा मांगे क्या मुख लेकर जाएगा
सिमरन भजन दया नहीं कीन्ही तो मुख चोटां खाएगा
कहत कबीर सुनो भई साधो साध संगत तर जाएगा

इस संसार समुंद्र से पार होने का एक ही तरीका है कि हमें कोई पूर्ण महात्मा मिल जाए, हम सच्चे दिल से उसकी शरण पकड़ लें। शरण पकड़ने का मतलब जो गलतियाँ पहले हुई हैं, अब वे गलतियाँ दोबारा न करें।

सुत नारी को मोह त्यागि कै, चीन्हो सब्द हमारा।।

कबीर साहब कहते हैं कि दुनिया के प्यार में कमी करें। सन्त हमें जो 'शब्द' देते हैं, उस 'शब्द' की कमाई करें।

सार सब्द परवाना पावो, तब उतरो भव पारा।।

कबीर साहब कहते हैं, ''हे भले पुरुषों! सन्त संसार में सच्चखंड से सार–शब्द का परवाना लेकर आते हैं। आप उनसे वह परवाना, वीजा लें। उन्हें मोहर लगाने का हुक्म है तभी आप आसानी से इस भवसागर से पार जा सकते हैं।'' गुरु रामदास जी ने भी कहा है:

जे जिया दंड को ले न जुगात, सतगुरु कर दीन्ही धुर की छाप

इक मत ह्वै के चढो नाव पर, सतगुर खेवनहारा।।

परमात्मा ने 'शब्द–नाम' का बेड़ा बनाकर उसे सन्तों के हवाले किया हुआ है, सन्त उस बेड़े को चलाने वाले कप्तान हैं। आप अच्छी तरह उस बेड़े को पकड़ लें, विश्वास के साथ उसमें चढ़ जाएं, सन्त आपको भवसागर से पार ले जाएंगे। जो लोग डाँवाडोल मन से इस बेड़े को पकड़ते हैं वे भव में यहीं गोते खाते रहते हैं, न आगे जा सकते हैं, न पीछे जा सकते हैं। आप एक मन होकर अच्छी तरह उस बेड़े में सवार हो जाएं। आपने नये कैलेंडर में यह शब्द पढ़ा होगा कि वह कृपाल आप ही नाविक है, आप ही नाव है और आप ही उस नाव को पार लेकर जाने वाला है।

साहेब कबीर यह निर्गुन गावैं, संतन करो बिचारा।।

***

भजन रोज करें। फुरसत में तो सिमरन करना ही है
लेकिन चलते–फिरते कामकाज करते हुए भी सिमरन
न छोड़ें क्योंकि सांस–ग्रास गिनती के हैं।

– बाबा जयमल सिंह जी –

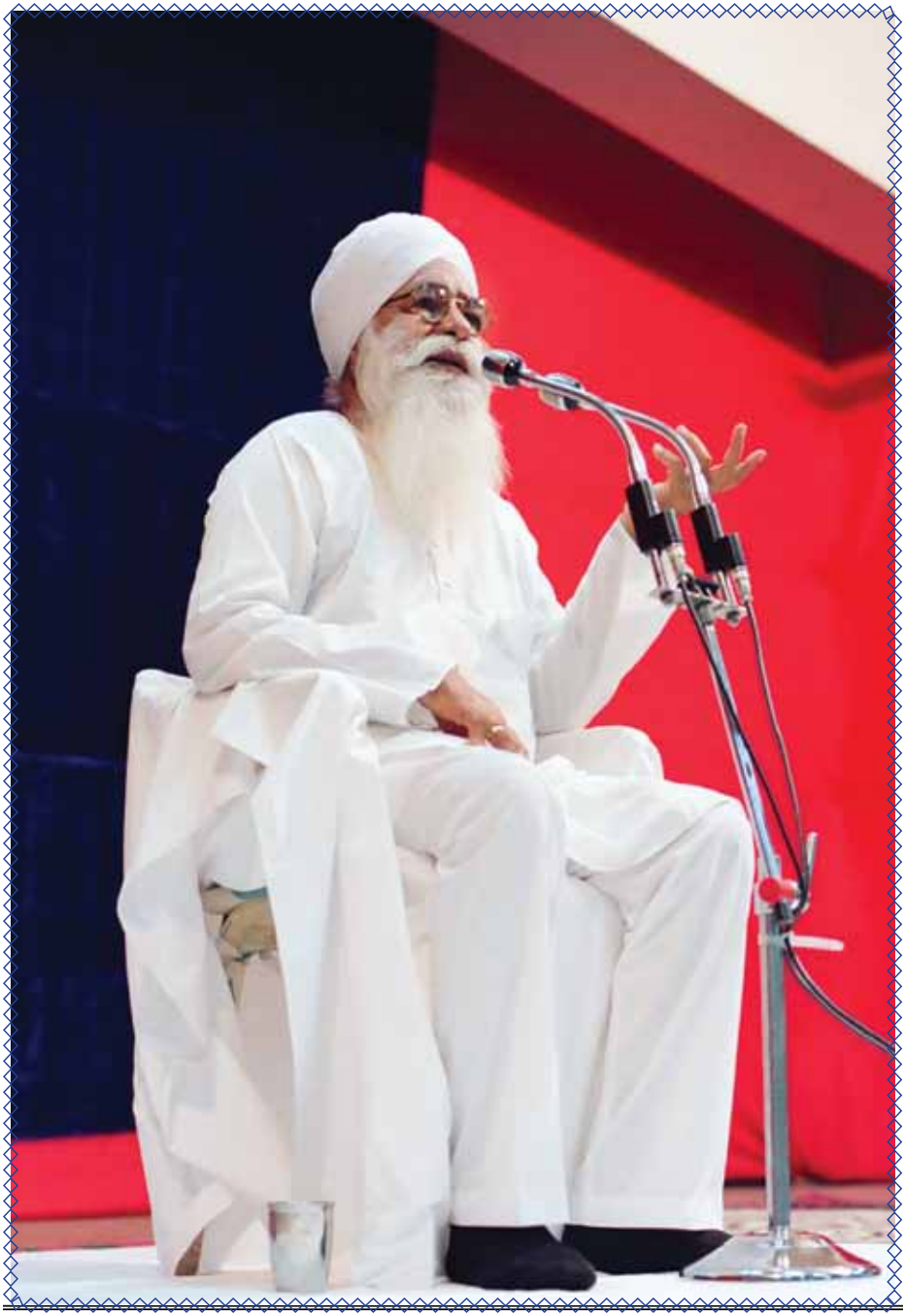

सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

14 फरवरी 1997

तड़प

साँपला (हरियाणा)

एक प्रेमी: *– भजन गाते समय हमारे अंदर जिस तरह की तड़प होती है, सिमरन करते समय भी हम उस तरह की तड़प कैसे बना सकते हैं?*

बाबा जी: – परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमारी गरीब आत्मा पर रहम करके हमें अपनी याद में बैठने का मौका दिया है। परमात्मा कृपाल सदा यही कहा करते थे, ''शब्द तो सभी अच्छे होते हैं लेकिन पसन्द अपनी–अपनी आत्मा की होती है। जिस शब्द में आपकी ज्यादा रूचि है भजन–सिमरन में बैठने से पहले उस शब्द को बोलें जिससे आपके अंदर **तड़प** पैदा हो।''

प्यारेयो, शब्द बोलते हुए जिस तरह हमारे अंदर तड़प बनती है, उस तड़प को कायम रखें बल्कि सिमरन के समय यह **तड़प** और भी बढ़ जानी चाहिए। शब्दों के जरिए हम गुरु के आगे नम्रता जाहिर करते हैं, अपनी कमियाँ बताते हैं और फरियादें करते हैं। सिमरन करते हुए सतसंगी को यह सोचना चाहिए कि मेरा गुरु मेरे पास है।

गुरु जब नाम देता है उस समय वह हमारे अंदर तीसरे तिल पर अपनी सीट बनाकर विराजमान हो जाता है। गुरु हमारी इंतजार में होता है अगर कोई हमारी इंतजार में हो तो क्या हम पीछे मुड़कर देखेंगे? अगर हमें उसके साथ सच्चा प्यार है तो हमारी कोशिश होगी कि वह हमारे सामने आए और हम उससे गले लगकर मिलें।

मैं बताया करता हूँ कि इश्क चाहे मिजाजी है चाहे हक़ीक़ी है दोनों में एक जैसी तड़प होती है। अगर किसी का किसी के साथ मिजाजी इश्क है

तो उसे रात को नींद नहीं आती, उसकी आँखों के आगे वही मनमोहनी मूरत घूमती रहती है। जब वह उसे मिलता है तो वह उससे गले लगकर मिलता है। यही **तड़प** हक़ीक़ी इश्क में भी है अगर हमारा गुरु के साथ सच्चा लगाव है तो रात को हमारी आँखों के आगे वही मनमोहनी मूरत रहेगी, हमें नींद नहीं आएगी। हम सोचेंगे अगर वह मिल जाए तो मैं उससे यह बात करूँ, वह बात करूँ। प्रेमी अपने अंदर ताने–बाने ही बुनता रहता है।

मेरे पास कई लड़के–लड़कियाँ आकर अपने प्यार का इजहार करते हैं लेकिन कोई भाग्यशाली जीव ही गुरु के प्यार का इजहार करता है। ऐसा नहीं कि गुरु से प्यार का इजहार करने वाले हैं ही नहीं, मेरे पास ऐसे भी आते हैं जो तहे दिल से गुरु का शुक्राना करते हैं।

मैंने आपको कई बार ससी–पुन्नू की कहानी सुनाई है, यह कहानी मासिक पत्रिका में भी छप चुकी है। ससी के दिल में अपने दोस्त पुन्नू के लिए बहुत **तड़प** थी। ससी ने बारह साल तक न अच्छी तरह खाना खाया और न वह अच्छी तरह सोई। जब उसका मिलाप पुन्नू से हुआ तो वह सो गई और पुन्नू को कोई और उठाकर ले गया। अगर वह उसी तरह अपनी तड़प बनाए रखती, न सोती तो कोई पुन्नू को उठाकर न ले जाता। आखिर ससी पुन्नू के वियोग में मरूस्थल में रो–रोकर मर गई।

अगर आप अभ्यास में बैठने से पहले सिमरन में सुस्ती करेंगे तो काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आपके पुन्नू को छिपा लेंगे क्योंकि ये विरोधी ताकतें हैं और आपको आपके दोस्त से नहीं मिलने देंगे। अगर आप उनके झांसे में आ गए तो हो सकता है कि आप भजन से उठकर काम–भोग में लग जाएं।

हमारी आगे जाने की इच्छा होनी चाहिए। हमें सिमरन के समय तड़प बढ़ानी चाहिए, दुनिया के बारे में नहीं सोचना चाहिए अगर हम सिमरन में आगे बढ़ते जाएंगे तो दोबारा इस दुनिया में हमारा जन्म नहीं होगा।

सोहनी ने देखा कि घड़ा कच्चा है उसे यकीन हो गया अगर मैं इसका साथ लेकर दरिया में जाऊंगी तो मेरी मौत निश्चित है। उसने सोचा कि इश्क बेदाग है मैं इसे दाग क्यों लगाऊँ। प्यारेयो, जिन्होंने गुरु घर में भी इश्क कमाया है उन्होंने दाग नहीं लगने दिया। जब सिमरन के समय हम मन में बुरे ख्याल उठाते हैं तो हम दाग ही लगा रहे होते हैं। हमारा गुरु तीसरे तिल पर बैठकर हमारी हरकतें देख रहा होता है। क्या हम अपने अंदर बुरे ख्याल उठाकर गुरु की बेअदबी नहीं कर रहे होते?

किसी दुकान पर चाहे छोटा सा बच्चा भी बैठा हो तो हम वहाँ से कोई सामान नहीं उठाते कि इंसान का बच्चा हमें देख रहा है। हम सोचते हैं कि हमारा गुरु हिन्दुस्तान में बैठा है या सोया हुआ है। ऐसा सोचने वाले गुरु से क्या फायदा उठा लेंगे?

प्यारेयो, हमारा गुरु नज़दीक से नज़दीक है और हमारी हर हरकत को देख रहा है। पूर्व और पश्चिम में सन्तों के अनेक सेवक जब चोला छोड़ते हैं तो गुरु कहीं और बैठा होता है लेकिन चोला छोड़ने वाले अगुवाही भरते हैं कि गुरु ने हमारी संभाल की।

महाराज सावन और महाराज कृपाल को चोला छोड़े हुए काफी समय हो गया है। जिन्होंने इन महान हस्तियों को देखा ही नहीं अगर उनके घर में कोई सतसंगी है, घर पर गुरु की बात चलती है तो वे भी जब चोला छोड़ते हैं तो इस बात की अगुवाही भरते हैं कि उन्होंने भी गुरु पावर की मौजूदगी महसूस की है।

मैं जब पश्चिम और मुम्बई सतसंग करने के लिए जाता हूँ तो कई प्रेमियों के माता–पिता मुझसे मिलने आते हैं। वे आकर मुझसे कहते हैं, ''हम सिर्फ आपको देखने के लिए आए हैं, आपने हमारे बच्चों के लिए बहुत कुछ किया है।'' उनके दिल में कितनी **तड़प** होती है, क्या परमात्मा उसका फल नहीं देगा? यह तो अपने–अपने बर्तन का सवाल होता है।

मैं तो आपको यही कहता हूँ कि चलते–फिरते, सोते–जागते, किसी से बातें करते हुए भी **तड़प** कम नहीं होनी चाहिए। आप सोते–जागते दुनिया की तड़प करते है तो आपको बुरे सपने आते हैं अगर आपमें गुरु की तड़प होगी तो आपको गुरु का सपना जरूर आएगा।

एक प्रेमी: *– भजन पढ़कर गाना बेहतर है या उस समय दर्शन करना बेहतर है क्योंकि दोनों ही जरूरी हैं। जिन्हें भजन याद नहीं वे तो किताब से पढ़कर ही गाते हैं।*

बाबा जी: – हमने बोलना जुबान से है और दर्शन आँखों से करने हैं। महाराज सावन सिंह जी दर्शनों की महानता के बारे में बताया करते थे कि ज्यादा लाभ दर्शनों का है क्योंकि परमात्मा सर्वव्यापक, अलख और अगम है, हम उसका ध्यान नहीं लगा सकते, उससे मिल नहीं सकते। इंसान की इस कमजोरी को देखकर ही परमात्मा इंसानी जामें में आता है।

महाराज कृपाल ने मुझे निजी तौर पर बताया था कि एक बार वे और डॉक्टर जॉनसन महाराज सावन की टाँगे दबा रहे थे, उन्होंने महाराज जी से पूछा, ''अंदर किस तरह का दर्शन होगा?'' महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''अंदर ऐसे ही नक्श होंगे जैसे आप अभी देख रहे हैं।''

जिन प्रेमियों का दर्शन पक चुका है वे कहते हैं कि गुरु आ गया है अगर उनको गुरु दिखता है तभी वे ऐसा कहते हैं। बाहर का चेहरा इतना आकर्षक नहीं होता, अंदर का सूक्ष्म चेहरा बहुत तेज वाला होता है, वह चुम्बक की तरह खींचता है। जैसे–जैसे शिष्य अंदर जाता है नूरी चेहरा सूक्ष्म से भी सुंदर है। गुरु की नजर आत्मा पर होती है। वह अभूल ताकत है, जिसे नाम देता है उसे कभी नहीं भूलता।

काल, सतगुरु की आत्मा को स्वीकार नहीं करता अगर कर भी ले तो सन्त नर्क में जाकर अपनी आत्मा को ढूंढ लेते हैं। अगर शिष्य की कोई निशानी नहीं होगी तो गुरु उसे कैसे ढूढेंगा? अगर सेवक का ध्यान नहीं

पका होगा तो वह गुरु के साथ कैसे आएगा, उसे कैसे यकीन होगा कि यह मेरा गुरु है इसने ही मुझे नाम दिया है। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

गुरु का ध्यान धर प्यारे, बिना गुरु नहीं छुटकारा

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

गुरु की मूरत मन में ध्यान, गुरु का शब्द मंत्र मन मान

गुरु हमें जो मंत्र देता है उसे जपें, उस मंत्र के आगे काल की ताकत नहीं ठहर सकती। गुरु के स्वरूप का ध्यान तीसरे तिल पर लाएं।

अकाल मूर्त है साध सन्तन की, ठहर नीकी ध्यान को

प्यारेयो, गुरु का स्वरूप काल के दायरे के पार से आता है। दुनिया का ध्यान तो बिना सोचे ही बनता रहता है, गुरु का ध्यान तीसरे तिल से नीचे नहीं बनता लेकिन हम एकाग्र नहीं होते इसलिए जुड़ नहीं पाते।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सतसंगी को उस जगह बैठना चाहिए जहाँ से उसे आसानी से गुरु के दर्शन होते रहें। जो पहले आता है वह आगे बैठे, जो बाद में आते हैं वे कभी भी दूसरे को उठाकर आगे बैठने की कोशिश न करें।'' आगे बैठने के लिए हम महाराज सावन के आने से पाँच–छह घंटे पहले आकर बैठा करते थे।

महाराज सावन सिंह जी का उपदेश बहुत सादा होता था। वे दो लफ़्ज़ो में ही सारी बात समझा देते थे। वे कहा करते थे, ''जट की नज़र खेत के पिछले हिस्से की तरफ ज्यादा होती है। सतसंग ध्यान लगाने का बहुत अच्छा मौका है, सतसंग के समय आपकी निगाह पाठी की तरफ भी नहीं जानी चाहिए।'' कबीर साहब कहते हैंः

साधु का निरख आँख और माथा, सत का नूर रहे नित साथा

जो लोग सतसंग में टिकटिकी लगाकर देखते हैं, वे बहुत कुछ देखते हैं और उन्हें अच्छे तजुर्बे भी होते हैं। इसलिए आप भजन बोलने की प्रैक्टिस पहले कर लें ताकि आपको किताब का सहारा ज्यादा न लेना

पड़े। किताब आगे रखकर थोड़ा सा ही किताब की तरफ देखें और निगाह दर्शनों पर ही रखें। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थेः

हथ कार वन्नी, दिल यार वन्नी

हाँ भई, प्रेमियों के सवाल बहुत अच्छे थे। परमात्मा सावन–कृपाल को याद करके दिल बहुत खुश हुआ। मैं ज्यादातर आप बीती सादे लफ्ज़ों में ही बताया करता हूँ। महाराज सावन सिंह जी हमेशा कहा करते थे, ''जिसने दो लफ्ज़ों में बात समझनी है वह मेरे पास आए और जिसने ज्यादा लफ्ज़ों में समझना है वह कृपाल सिंह के पास जाए। कृपाल सिंह पहले गन को खोलता है फिर जोड़ता है।''

मुझे इन दोनों महापुरुषों के चरणों में बैठकर जो प्यार मिला है, मैं वही प्यार आपके साथ बाँट रहा हूँ। मेरे दिल और दिमाग में उनकी बहुत याद भरी हुई है। जैसे खींचने से स्प्रिंग तन जाता है और ढीला छोड़ने से अपनी जगह आ जाता है इसी तरह मैं जब भी उनकी बात करता हूँ तो मुझे बहुत शान्ति–आराम मिलता है। उनके संपर्क में बैठकर जो बातें हुई उन बातों को याद करके ही मैं आपको बताया करता हूँ।

महाराज सावन सिंह जी, महाराज कृपाल सिंह जी को ज्यादातर बाऊजी या मौलवी कहा करते थे। सिकन्दरपुर का वाक्या है शादी होनी थी और महाराज कृपाल का इंतजार हो रहा था। महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''हमारे मौलवी को तो आ जाने दो।''

एक प्रेमीः – *हम लोग कुछ दिनों के लिए आपके पास आए हुए हैं। क्या हमारी यह पवित्र यात्रा सच्चखंड पहुँचने का छोटा सा रूप है?*

बाबा जीः – हाँ भई, गुरु अर्जुनदेव जी परमात्मा को याद करते हुए कहते हैं, ''हे परमात्मा, मैं नहीं जानता कि आप मेरे लिए क्या कर रहे हैं लेकिन आपने जिस पहुँची हुई आत्मा से मुझे मिलवाया उसकी वजह

से ही मैं आप तक पहुँच सका।'' जब यह आत्मा सच्चखंड पहुँचती है तो इसे अहसास होता है कि मैं गुरु की वजह से ही परमपिता परमात्मा से मिल सकी हूँ।

गुरु अर्जुनदेव जी फिर कहते हैं, ''हे मेरे सतगुरु, मेरे परमात्मा, मुझमें कोई गुण नहीं है। मैं आपकी दया से ही आपके दरवाजे तक पहुँच सका हूँ और आपकी दया–मेहर से ही आपके चरणों में हूँ।'' जब परमात्मा जीव पर दया करता है तो उसका मिलाप सन्त–सतगुरु से करवाता है ताकि यह आत्मा परमात्मा से मिल सके।

जब हम सतगुरु से मिलते हैं तो सतगुरु हमें 'शब्द–नाम' का दान देकर हमसे भजन–अभ्यास करवाते हैं। हम भाग्यशाली हैं कि परमात्मा ने हम पर दया की जो हम इस पवित्र यात्रा पर आ सके, हमने इस पवित्र यात्रा में सिर्फ परमात्मा को ही याद करना है। काल ने दुनिया को अपने जाल में फँसा रखा है, इस युग में परमात्मा की तरफ आना बहुत मुश्किल है।

हमारी हालत उस छोटे बच्चे की तरह है जो अभी चलना सीख रहा है। वह गिरता है, चलने की कोशिश करता है फिर गिर जाता है और रोने लगता है। जब माता–पिता देखते हैं कि उनका बच्चा बहुत कोशिश करने के बाद भी किसी जगह नहीं पहुँच पा रहा तो वे उसे अपनी बाँहों में उठाकर उस जगह पहुँचा देते हैं, जहाँ वह पहुँचना चाहता है।

इसी तरह जब हम सिमरन करते हैं, भजन पर बैठते हैं लेकिन भजन नहीं बनता तो हम रोते हुए गुरु के आगे प्रार्थनाएं करने लगते हैं। गुरु देखता है कि हम चलने की पूरी कोशिश कर रहे हैं लेकिन हम उस तक नहीं पहुँच पा रहे तो वह हमारी मदद करता है। हमें अपनी गोद में लेकर उस जगह पहुँचाता है जहाँ हमारी आत्मा को पहुँचना चाहिए।

अगर हम नामदान मिलने के बाद परमार्थ के रास्ते पर चलते रहें और गुरु के कहे अनुसार उसी जोश के साथ भजन–सिमरन करते रहें तो हम

सिर्फ अपनी ही नहीं और भी सैंकड़ो आत्माओं को मुक्ति दिला सकते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

जैसी लौ पहले लग्गी, तैसी निबहे ओड़
अपनी देह की क्या गत, तारे पुरुष करोड़

सभी सतसंगी जानते हैं कि मन हमें किस तरह नचाता है। यह मन हमें कुछ समय भजन–सिमरन करने देता है फिर सिमरन से दूर कर देता है। हम फिर अपने आपको भजन–सिमरन के लिए तैयार करते हैं और करीब दस दिन लगातार भजन–सिमरन पर बैठते हैं लेकिन यह मन हमें फिर सिमरन से दूर करके खुष्क कर देता है।

जब किसी प्रेमी को नामदान मिल जाता है तब उसे अपने मन की बात सुननी बन्द कर देनी चाहिए अगर वह मन की बात मानेगा तो अपने लिए बड़ी मुश्किल खड़ी कर लेगा। आपका मन आपके साथ है लेकिन आपने उसकी बात नहीं माननी अगर आप उसकी बात मानेंगे तो आज का भजन–सिमरन कल पर डाल देंगे। यही मन कल भी आपके साथ होगा और आपको भजन–सिमरन नहीं करने देगा। प्रेमी सतसंगी को पूरी ताकत के साथ अपने मन से लड़ना होगा तभी वह भजन–सिमरन कर सकेगा।

अगर हम कोई दुकान चला रहे हैं तो हम दस दिन के लिए दुकान बंद नहीं कर सकते, ऐसा करने से हमारा व्यापार बंद हो जाएगा और हमें बहुत नुकसान होगा। अगर हम कोई नौकरी कर रहे हैं तो हम दस दिन के लिए वहाँ से गैरहाजिर नहीं हो सकते क्योंकि ऐसा करने से हमारा मालिक हमें नौकरी से निकाल देगा। हमें हमेशा दुनिया के धंधों की चिन्ता लगी रहती है। क्या हमने कभी अपने भजन–सिमरन की तरफ ध्यान दिया है कि हम अपना कितना बड़ा नुकसान कर रहे हैं? अगर हम भजन–सिमरन नहीं करते तो सतगुरु की दया प्राप्त नहीं कर सकते।

***

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

26 जनवरी 1987
गुरु नानकदेव जी की बानी

सुख और दुःख

DVD-529(2) 16 पी.एस.आश्रम (राजस्थान)

गुरु नानकदेव जी से आपके सेवकों ने विनती की कि आप अपने सतसंगों में सुखों और दुःखों के बारे में बयान करते हैं। **सुख और दुःख** क्या हैं? हम जीव अंधेरे में फँसे हुए हैं, हमें न सुख का पता है, न दुःख का पता है। मामूली सा दुःख या कोई समस्या आने पर हम रो पड़ते हैं मामूली सा सुख आने पर हमारे अंदर अहंकार आ जाता है कि इसमें हमारी कोई विशेषता है। आप हमें प्यार से समझाएं ताकि हम फायदा उठा सकें।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''प्यारेयो, वे सुख, सुख नहीं जिनका अंत दुःख हो। हम भोग भोगते हैं, क्षणभंगुर सुख को सुख समझते हैं, भोग से रोग उत्पन्न होते हैं। जब रोग पैदा होते हैं तो हम पछताते हैं।''

बहु साधो दुःख प्राप्त होवे, भोगों रोग से अन्त बेगोवे, आए जाए दुःख पाऐंन्दा

सन्तों का भाव उस दुःख से है जो हमें मौत के समय भुगतना पड़ता है। जो पैदा होता है वह अवश्य मरता है। जो नाम की कमाई के बिना संसार छोड़ता है उसे अपने कर्मों के मुताबिक कहीं न कहीं जन्म अवश्य लेना पड़ता है। माँ के पेट के अंदर जीव की हालत देखें! यह वहाँ उल्टा लटका होता है, मुँह नीचे और पैर ऊपर की तरफ होते हैं।

वह बड़ी तंग और अंधेरी जगह है, वहाँ कुछ भी दिखाई नहीं देता। माँ को भी अपना दुःख नहीं बता सकता और किसी तरफ दौड़ भी नहीं सकता। कई बार माता जो खाना खाती है वह बच्चे की सेहत के लिए अच्छा नहीं होता, अंदर दर्द होता है। माता को पता नहीं होता कि दर्द बच्चे की वजह से हो रहा है या और कोई वजह है।

वहाँ इसने सब सहारे छोड़कर एक परमात्मा का ही सहारा रखा होता है, परमात्मा इसे वहाँ से बचाकर मातलोक में भेजता है। अफसोस की बात है कि बाहर आकर यह क्षणभंगुर सुखों को ही सुख समझकर उस धनी परमात्मा को भूल गया जिसने माँ के पेट के अंदर इसकी रक्षा की थी।

आगे चलकर फिर परमात्मा के सामने पेश होना है। आप थोड़े से समय के लिए परमात्मा को भूले बैठे हैं, मौत–पैदाईश को भूले बैठे हैं। हम सोचते हैं कि जन्मते–मरते तो और लोग हैं, हमने तो शायद यह कष्ट देखा ही नहीं लेकिन महात्मा हमें याद दिलाते हैं कि वह कष्ट का समय हर किसी को देखना पड़ता है। सबसे बड़ा दुःख मौत और पैदाईश का है।

मुख तले पैर ऊपरे वसन्धे कुहथड़े थाँव
नानक सो धनी क्यों विसारया उदरे जिसका नाँव

बाबा जयमल सिंह जी बताया करते थे कि बच्चे की हड्डियाँ माता के पेट की जठर अग्नि के ताप से पकाई जाती हैं इसलिए सख्त होती हैं। नब्बे दिन तक जीव माँस के टुकड़े की तरह पड़ा रहता है फिर जाकर कहीं हड्डियाँ पकती है। गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं,:

जैसी अग्न उदर में तैसी बाहर माया, माया अग्न सब ऐको जेही

पेट की जठर अग्नि का ताप और माया की आग दोनों एक जैसी होती हैं। बाहर आकर मातलोक की पवन, माया का नशा चढ़ जाता है, जीव परमात्मा को भूल जाता है जिसके आसरे इस संसार में आया।

महात्मा हमें जानकारी देते हैं कि आत्मा सच्चखंड की रहने वाली है। वहाँ मौत–पैदाईश नहीं, ईर्ष्या नहीं, माया का कोई असर नहीं। सुख प्राप्त करने की कीमत दुःख है। आप दुनिया में कोई भी कारोबार करें तो मेहनत करनी पड़ती है, कष्ट उठाना पड़ता है। बिना कष्ट उठाए माता बच्चा भी पैदा नहीं कर सकती। इसी तरह सोना खान में से खोदकर निकाला जाता है और मोती प्राप्त करने के लिए गहरे समुंद्र में डुबकी लगानी पड़ती है।

अगर कोई यह कहता है कि मैंने मेहनत किए बिना, कष्ट उठाए बिना सुख प्राप्त कर लिया है या परमात्मा को मिल गया हूँ तो वह एक और कर्ज उठा रहा होता है। हमें सन्तों की जीवनियाँ पढ़कर पता चलता है कि उन्होंने कितना संयम रखा होता है, कितनी मेहनत की होती है, कितनी भूख–प्यास काटी होती है। भाई गुरदास जी बहुत श्रद्धालु और अच्छी कमाई वाले थे वे अपनी वार में लिखते हैंः

रेत अक्क आहार कर रोड़ां दी गुरु करे बिछाई

गुरु नानकदेव जी बेदी कुल में पैदा हुए थे, बहुत लोग अभी भी बेदी कुल का आदर करते हैं। आपके माता–पिता आपको सब किस्म की सहूलियतें दे सकते थे लेकिन आप ग्यारह साल तक अक्क के पत्ते उबालकर पीते रहे और आपने दुनिया के सब सुख–आराम छोड़कर ईंट–पत्थरों का बिछौना किया ताकि पूरी नींद न आ सके। गुरु नानकदेव जी की पूज्य माता ने आपसे पूछा, ''बेटा, 'नाम' जपना कितना मुश्किल है?'' आपने आँखें भरकर कहाः

आखण औखा सच्चा नाम

सच्चा 'नाम' कह देना बहुत मुश्किल है। हम नाम की तरफ जितना आकर्षित होते हैं, मेहनत करते हैं वह मालिक हमारे सामने उतनी ही मुश्किलें खड़ी कर देता है। वह देखता है क्या ये इन्हीं मुश्किलों में उलझ गए हैं या मुझसे मिलकर ही खुश होंगे? हमारे राजस्थान की कहावत हैः

तेरे दुःखां दी बणूंगी दारु, ते सुख तेरे रोग होंणगे

आप कहते हैं, ''अगर हम यहाँ कष्ट सहते हैं, रातें जागकर मेहनत करते हैं, परमात्मा की भक्ति करते हैं तो परमात्मा में मिल जाते हैं। अगर हम विषय–विकारों में लगकर परमात्मा को भूल जाते हैं तो हमारे अंदर परमात्मा से मिलने की इच्छा ही पैदा नहीं होती।'' कबीर साहब कहते हैंः

सुख में सिमरन न किया, दुःख में किया याद
दुःखी होय दास की, कौन सुने फरियाद

अगर हमारे दरवाजे पर कोई जोरावर दुश्मन आ जाए, उस समय हम बंदूक चलाना सीखें या प्यास लगने पर कुआँ खोदें तो हम कभी भी कामयाब नहीं हो सकते, आजकल जीवों की यही हालत है।

जब अन्त समय आता है बीमारियाँ घेर लेती हैं तब हम दान–पुण्य करते हैं। मौत के समय मरने वाले को गीता या किसी धर्मपुस्तक का पाठ सुनवाते हैं अगर उस समय मरने वाला सुन नहीं सकता तो उसकी जगह कोई और सुनने के लिए बैठ जाता है फिर उसके मुँह में पानी डालते हैं। हिन्दु लोग आखिरी समय में ज्योत जलाकर पूछते हैं, ''क्या ज्योत नजर आ रही है?'' यह सब कुछ तो हमने जीते जी करना था। अन्त समय में क्या हो सकता है? कबीर साहब कहते हैंः

अब ना भजस भजस कर भाई, आवे अन्त ना भजया जाई

अब तो परमात्मा को याद नहीं करता, भजन नहीं करता, अन्त समय में तू किस तरह भजन करेगा, किस तरह परमात्मा को याद करेगा?

दुखु दारू सुख रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई।।
तूं करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई।।

सुख रोग है, दुःखों से छुटकारा पाने के लिए नाम की कमाई करें।

संसार रोगी नाम दारू, मैल लग्गे सच बिना
अपना चित्तवय हर करे, क्या मेरा चित्तव्या होए

तू करण–कारण और पतित–पावन है। कोई तुझे सलाह नहीं दे सकता। परमात्मा जो चाहे सो करता है। हमारे सोचने से क्या होता है? गुरु साहब प्यार से कहते हैंः

मता करे पूरब दे ताईं पश्चिम ही ले जात

हम पूर्व की तरफ जाना चाहते हैं वह पश्चिम की तरफ ले जाता है, हमें उसकी प्लानिंग का ज्ञान नहीं। जानवर प्यासे मरते हैं, वह एक पल में इतनी बारिश कर देता है कि जल थल हो जाता है। राजा रात को सोता है

सुबह उठते ही दूसरी पार्टी वाले उसे कैद करके जेल की कोठरी में डाल देते हैं। इसी तरह शेर जंगल में आजाद है जब शिकारियों के हाथ में आ जाता है तो वह अपने आपको पिंजरे में पाता है।

सन्त वजीदा कहते हैं, ''एक के घर में बेटे हैं, आगे उनके भी बेटे हैं। एक के घर में बेटियाँ हैं, आगे उनके भी दोहते हैं। एक के घर में सिर्फ एक ही बच्चा होता है वह भी किसी एक्सीडेंट में मर जाता है। उस साहेब परमात्मा को कौन कह सकता है कि तू इस तरह नहीं इस तरह कर?''

बलिहारी कुदरति वसिआ।। तेरा अंतु न जाई लखिआ।।

आप कहते हैं, ''मैं तुझ पर बलिहार जाता हूँ, तू बहुत सुंदर तरीके से जीवों के अंदर बस रहा है। ज्योत रूप होकर सबको सतह दे रहा है, कोई तेरा अन्त नहीं पा सका। बड़े–बड़े आलिम–फाज़िलों ने बहुत जोर लगाया आखिर तुझे बेअंत कहकर चुप हो गए।''

जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ।।

आप कहते हैं, ''तू सारे जीवों में ज्योत रूप, शब्द रूप होकर विराजमान है। तू सबकी रक्षा कर रहा है, तू जीवों में इस तरह मिला हुआ है जिस तरह पानी में पतासा मिल जाता है।'' कबीर साहब कहते हैंः

ज्यों तिल माही तेल है, ज्यों चकमक में आग
तेरा प्रीतम तुझमें, जाग सके तो जाग

वह परमात्मा सबमें इस तरह समाया हुआ है जिस तरह तिलों में तेल दिखाई नहीं देता लेकिन यत्न से निकाला जाता है। पत्थर में अग्नि है लेकिन युक्ति से रगकड़कर निकाली जाती है। इसी तरह तेरा प्यारा प्रीतम तेरे अंदर है अगर तू हिम्मत करके उसे जगा सकता है तो जगा ले।

तूं सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पइआ।।

अब आप कहते हैं, ''तू सच्चा साहिब है कभी फ़ना नहीं होता, तू आदि–जुगादि से चला आ रहा है। तेरी सिफ़त बहुत सुंदर है प्यारी है। जिस भाग्यशाली जीव ने तेरी सिफ़त गाई, तेरी भक्ति की वह सदा के लिए दुःखों से छुटकारा पा गया, इस संसार समुंद्र से तर गया।''

कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ।।

जिन प्रेमियों ने आपसे सवाल किया था, आप उन्हें प्यार से कहते हैं, ''प्यारेयो, मैंने आप लोगों को उस करण–कारण भगवान से मिलने के फायदे बताए हैं। वह भगवान ज्योत रूप, शब्द रुप होकर सबके अंदर विराजमान है, वह जो चाहे सो कर सकता है। उसे कोई सलाह देने वाला नहीं, उसका कोई शरीक नहीं, कोई भाई–बंधु नहीं।''

जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं ब्राहमणह।।

किसी ने गुरु अंगददेव जी से सवाल किया कि यह दुनिया चार वर्णों– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में बँटी हुई है, क्या इनके धर्म अलग–अलग हैं? गुरु अंगददेव जी कहते हैं, ''प्यारेयो, परमात्मा से जुड़ने का नाम योग है। ब्राह्मण का धर्म 'शब्द–नाम' की कमाई करना और लोगों को भी शब्द–नाम का ज्ञान देकर भक्ति में लगाना है।''

खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह।।

आप कहते हैं, ''क्षत्रिय का धर्म बहादुरी करना और लोगों को भी बहादुरी की तरफ प्रेरित करना है, देश की सेवा क्षत्रिय लोग ही करते हैं। शूद्र का धर्म है लोगों के घरों की सफाई करना और मेहनत करके अपनी रोजी–रोटी कमाना।''

सरब सबदं एक सबदं जे को जाणै भेउ।।

आप प्यार से कहते हैं, ''ब्राह्मण का धर्म यज्ञ करना और यज्ञ करवाना, विद्या पढ़नी और विद्या पढ़वानी, अतिथियों की सेवा करना और

सेवा करवाना है। सबका धर्म नाम जपना है। परमात्मा का धर्म ही हमारी आत्मा का धर्म है।'' गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

सगल धर्म में श्रेष्ठ धर्म, हर का नाम जप निर्मल कर्म

जो महात्मा सच्चखंड से आते हैं वे दुनिया में बँटवारा नहीं करते। वे पहले के बने हुए समाजों को नहीं तोड़ते और न ही कोई नया समाज बनाते हैं। वे आकर सच्चाई बताते हैं कि किस तरह परमात्मा की भक्ति करनी है, वह परमात्मा सबके अंदर है।

महात्मा हमें बताते हैं कि जिस तरह सूरज की कोई जाति नहीं, वह सबको एक समान रोशनी देता है इसी तरह परमात्मा की भी कोई जाति नहीं। जो परमात्मा की भक्ति करता है, परमात्मा उसी का हो जाता है।

एक क्रिसनं सरब देवा देव त आतमा।।
आतमा बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ।।
नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ।।

अब आप कहते हैं, ''एक कृष्ण जो सबसे बड़ा परमात्मा है वही सबका देवता है, वही जीवित रूप में आत्मा होकर सब जीवों में विराजमान है। जो इस भेद को समझ लेता है वही जीते जी देवता है और मैं उसका सेवक हूँ। यह मसला बातों से हल नहीं होता।''

गल्ली किसे न पाया

सन्त हमें अपना तजुर्बा बताते हैं कि हमने किस तरह अपने ख्यालों को पवित्र करना है, किस तरह सन्तों का दिया हुआ सिमरन करना है और किस तरह तीसरे तिल पर एकाग्र होना है। जब हम तीसरे तिल पर एकाग्र हो जाते हैं फिर हमें कुछ समझ आती है क्योंकि यहीं से हमारे सफर की शुरुआत होती है। जब हम अपने अंदर परमात्मा को देख लेते हैं तब हमें सच्चाई का पता चलता है कि परमात्मा सबके अंदर विराजमान है।

ऐसा सतसंगी, ऐसा महात्मा जीते जी देवता है। ऐसा सतसंगी किसी के साथ द्वेष नहीं रखता, सबको परमात्मा का बच्चा समझता है। गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज कहते हैंः

साध कर्म जो पुरुष कमावे, नाम देवता जगत कहावे

जिन लोगों ने नेक कर्म किए, सबको परमात्मा का जीव समझकर प्यार किया, किसी को कष्ट नहीं पहुँचाया, सबकी मदद की, लोग उन्हें देवता कहने लगे। जिन्होंने संसार में आकर परमात्मा के जीवों पर अत्याचार किए उन्हें दैत्य कहकर बयान किया गया है।

कुंभे बधा जल रहै जल बिन कुंभु न होई।।

आप अपने प्यारों से कहते हैं, ''घड़ा पानी के बिना नहीं बन सकता, घड़े की उत्पत्ति पानी से हुई है। पानी घड़े में रहता है नहीं तो पानी बिखर जाएगा। आपका मन दुनिया में हिरण की तरह भटक रहा है, उसे गुरु का नाम ही टिका सकता है। मालिक के प्यारों की उत्पत्ति परमात्मा में से हुई है उनके अंदर भी परमात्मा है और सेवक के अंदर भी परमात्मा है।''

महात्मा ने परमात्मा को अपने अंदर प्रकट कर लिया होता है और उस ताकत को संसार में काम करते हुए देख लिया होता है लेकिन सेवक अभी उस कोशिश में है। जिस दिन सेवक उस ताकत को अपने अंदर प्रकट कर लेता है फिर गुरु और सेवक दोनों में कोई भिन्न–भेद नहीं रहता।

गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ।।
पड़िआ होवै गुनहगारु ता ओमी साधु न मारीऐ।।

सेवकों ने गुरु नानकदेव जी से विनती की, ''आप हमें यह बताएं कि पढ़ा–लिखा परमात्मा से मिल सकता है या अनपढ़ परमात्मा से मिल सकता है? अगर पढ़ा–लिखा गलती करे तो क्या उसकी गलती माफ हो सकती है या अनपढ़ की गलती माफ हो सकती है?''

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''अगर पढ़ा–लिखा गलती करता है तो उसकी जगह अनपढ़ साधु को, नाम की कमाई करने वाले को सजा नहीं दी जा सकती। इस दुनिया में भी अगर कानून का जानकार गलती करता है तो उसे सजा मिलती है। यहाँ पढ़े–लिखे या अनपढ़ का सवाल नहीं। हमें अच्छे कर्मों का इनाम और बुरे कर्मों की सजा मिलती है।''

जेहा घाले घालणा तेवेहो नाउ पचारीऐ।।

जो जैसे कर्म करता है उसका वैसा ही नाम पड़ जाता है। नाम जपने वाले को सतसंगी, भक्त या सन्त कह देते हैं। बुरे कर्म करने वाले के कई तरह के नाम रख देते हैं।

ऐसी कला न खेडीऐ जितु दरगह गइआ हारीऐ।।

हमें ऐसे कर्म नहीं करने चाहिए जिनकी वजह से हमें परमात्मा के दरबार में जाकर शर्मिन्दा होना पड़े और हमारी हार हो।

पड़िआ अतै ओमीआ वीचारु अगै वीचारीऐ।।

परमात्मा के दरबार में पढ़े–लिखे और अनपढ़ का विचार नहीं होता। जिसने जैसा कर्म किया होता है उसे वैसी ही सजा या इनाम मिलता है।

मुहि चलै सु अगै मारीऐ।। मुहि चलै सु अगै मारीऐ।।

आप कहते हैं, ''वह परमात्मा साँस–साँस का हिसाब लेता है, उसकी किसी के साथ दुश्मनी नहीं किसी के साथ प्यार नहीं। वह हमारे कर्म देखता है अगर हम बुरे–खोटे कर्म करके जाते हैं तो यमदूत हमें पीटते हैं फिर हम पछताते हैं।''

हमें भी चाहिए कि हम गुरु नानकदेव जी के कहे मुताबिक 'शब्द–नाम' की कमाई करें। सदा ही परमात्मा की भक्ति में लगे रहें और अपने जीवन को सफल बनाएं।

***

RNI No - RAJHIN/2003/9899